

परिच्छेद एक

शोध परिचय

१.१ विषय परिचय

वि.सं. १९९२ वैशाख १२ गते कास्की जिल्लाको बाटुलेचौरमा जन्मेका झलकमान गन्धव नेपाली भाषा लोकगायक हुन्। उनले गाईने गीत अथवा गन्धव संगीतलाई प्रख्यात गराउनमा मुख्य योगदान पुऱ्याएको पाइन्छ। गन्धव संगीत नेपालका गाईने समुदायका मानिसहरूले मात्र गाउने गदछन्। पहिलोपल्ट गन्धव गीतको रेकड तथा रेडियोबाट प्रसारण गर्न काम झलकमानले नै गरेका हुन्। 'आमाले सोधिलन् नि', 'तानसेन घमाइलो', 'बाला जोवन', 'राधा पियारी', 'खाम्तो भने सुन्तला पानी' लगाएतका थुप्रै चर्चित लोकगीतहरू उनले गाएका छन्। यी गीत मध्ये सबैभन्दा लोकप्रिय गीत आमाले सोधिलन् नि गीत हो। जसमा युद्ध मैदानमा घाइते लाहुरेको अन्तिम सन्देशको रूपमा मार्मिक रूपले गाइएको छ। झलकमानले गन्धव समुदायका अन्य सदस्यहरूले जस्तै बालक कालदेखि नै आफ्नो सांगीतिक जीवन सुरु गरेका हुन्। उनले आफ्नो व्यवसायिक जीवनको सुरुमा अन्य गन्धवहरू जस्तै गाउँ घुम्दै गाईने गीत गाउँथे। धमराज थापाको सहयोगले वि.सं. २०२२ मा रेडियो नेपालद्वारा आयोजना गरिएको राष्ट्रव्यापी लोकगीत प्रतियोगितामा भाग लिएर प्रथम स्थान हाँसिल गरेका गन्धवले वि.सं. २०२४ देखि रेडियो नेपालमा बादयवादकको रूपमा सेवा सुरु गरे।

झलकमानले नेपाल लोकगीतको क्षेत्रमा विभिन्न प्रकारका गीतहरू जस्तै: झ्याउरे, कखा, ख्याली, भजन आदि गीत सङ्कलन, गायन र रेकड गराएका छन्। गन्धवले दोस्रो विश्वयुद्धको समयमा बहादुरी कमाएका नेपालीहरूको प्रशंसामा कखाहरू रचना गरे। नेपाली साङ्गीतिक क्षेत्रका चर्चित व्यक्तित्व झलकमान गन्धवले प्रशस्त गीत गाए पनि एल्बमकै रूपमा भने एक मात्र गीत एल्बम प्रकाशित छ। नेपाली लोकगीतमा उनको योगदान महत्त्वपूर्ण मानिन्छ। उनले आफ्नो सम्पूर्ण जीवन गन्धव गीतको संकलन, परिभाजन तथा प्रस्तुतिमा बिताए। ६८ वर्षको जीवन बाँचेका झलकमानले नेपालमा मात्र नभएर संसारका विभिन्न देशहरू जस्तै : जमनी, युगोस्लाभिया, बेल्जियम, फ्रान्स र भारतमा पनि आफ्नो सांगीतिक कला प्रस्तुत गरेका थिए। हाल उनको देहवसान भइसके पनि नेपाली लोकगीत विशेष गरी झ्याउरे, कखा, ख्याली, भजन

जस्ता क्षेत्रमा पुऱ्याएको योगदान अविस्मरणीय रहेको छ। यस्तो व्यक्तित्वका बारेमा अहिलेसम्म गरिएका खोज र अनुसन्धानलाई आधार बनाई अझबढी खोज र अनुसन्धान गरी यस शोधकायमा उनको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वको अध्ययन गरिएको छ।

१.२. समस्या कथन

झलकमान गन्धव गाउँ-घरमा पुगी प्रत्यक्ष घटित घटनालाई शब्दको रूपमा संकलनको साथै लयमा मिलाएर लोकगीत बनाउने सक्ने क्ष

इख त दृष्टे न त दृष्टे त ष स त के ,
व्यक्तित्वका विविध सन्दर्भ रू । रू स ?

न प्रश्न प्राज्ञिक स न द
रि रू रि , त के त कृतित्वको ग द रि श

रि त गन्धव द विश्लेषण प्र
स । प्राज्ञिक स रू ने रि लिखित प्रश्नको

प्राज्ञिक परिहल्युआने त्र :-

-) गन्धव विभिन्न सन्दर्भ रू स ?
-) गन्धव व्यक्तित्वका रू ?
-) गन्धव रि त स ?

१.३. शोधकायको उद्देश्य

गन्धव , त के त कृतित्वको द रि श
। । क्षेत्रमा रू त इ

देश प्रस्तुत - त्र उद्देश्य रू निम्ना :-

- . गन्धव विभिन्न सन्दर्भको द ,
- . गन्धव व्यक्तित्व विविध रि प्र ,
- . गन्धव रि त रि श

१.४. पूर्वकायको समीक्षा

गन्धवको , त के त कृतित्वको ष त्र द
 न गन्धव ि ि ी इ ,
 , खयाली, स क्षेत्रमा महत्त्वपूर्ण ः स त के
 ि स ि ः द न
 ी त्र क्र गन्धव ि
 ि ी द निम्ना ि न :-

पत्रिका **विकिपीडिया** (<http://ne.wikipedia.org/wiki/> _गन्धव)

न फ त ि रु न न रु
 स ः गन्धव ,
 मानिसहरूले त्र , ि ल ि प्र
 ि ल ि

ि ी नयाँपत्रिका ष्ट्र ि () ि श
 ि ि ि ि ः न
 ः स रु न ि स ल ।

नेपाल ष्ट्र ष्ट्र ि पत्रिका () 'सुनसान सारङ्गी बस्ती'
 ि रु ि ने
 ल न गन्धव
 स ि ः शिथिल ल ि

से शान्तिको लागि सारङ्गी
 (<http://sarangi4peace.blogspot.com/2011/01/blog-post.html>)

त्रि ठिठो पट्याउन सारङ्गी न गन्धव र्चाचित
 न ' ... द ि ;' ल ि ...'
 ि ि ि ि कान्छो ल ...; ' ...' स

रि म्फ्र रि

ल रि

साप्ताहिक पत्रिका () 'नेपाली गीत संगीतमा
पोखरा' गन्धव खे । इ ग्र इ

। गोरखापत्रको अनलाइन संस्करण

(http://www.gorkhapatra.org.np/rising.detail.php?article_id=9923&cat_id=4) गीत

संगीतमा दलित विम्ब गन्धव क्ष
रि त्र ।

सूयकुमार क्षेत्रीको उ रि (तै) पी
रु

http://www.unn.com.np/index.php?pageName=news_details&catId=16&id=1358)

‘ रि ख रि ? ’ खू स
रु त

न रु जनताका लोकगायक झलकमान
गन्धव () रु , त के त ,
क्ष प्राप्ति विभिन्न रु
रु रि

१.५. शोधकायको औचित्य, महत्त्व र उपयोगिता

। क्षेत्र फ रि नि रि
गन्धव रि ल विभिन्न रु ,
इ , , ख्याली प्र रि रु रि
रु , व्यक्तित्वका सन्दर्भ रु कृतित्वको
रु क्षेत्र रु रि रि रि रि
न ज स रि ब औचित्य

त्र द ि १ थ ि
त ि प्रि प्रे ि महत्त्व
प्रष्टिन्छ क्षेत्रमा इ , ख्याली इ
न ि द , न ि
प्रस्तुत - त्र १ क्षेत्र द न द रु
ग्र न म १ लोकसष्टाका प्राजिक न
१२ न रु त्र ि न प्रस्तुत गन्धव
, व के त ि त म ने स प्राजिक थ ि
क्षेत्रमा द १२ द निर्मित्त
औचित्य, महत्त्व ि स डे न

१.६. शोधकायको सीमाङ्कन

गन्धव , व के त कृतित्वको द
ि सवक्षण १ त म न सिद्धान्तमा
रु १२ १ परिचयात्मक १ ि :
व्यक्तित्वका म ि त ि रु त्र ई

१.७. सामग्री सङ्कलन र शोधविधि

निमाणमा ग्री इ रु प्र ि दा
प्र सं रु ि प्र ि सं रु ि
ि ि व्यक्तिहरूसँग सम्पर्क १ ि २ १ ि
ग्री इ ि त्यसैगरी गन्धव ल
ि ि १२ ग्री रु प्र ि दा
सं रु विभिन्न ि - ि ि , त्र त्रि , पुस्तकहरूको प्र , स
द द ि क्र गन्धव

व्यक्तित्वका महत्त्वपूर्ण क्षरु क्रा रु ि श ट ख ि
 म प्रप ि विभिन्न प्र रु ि
 ि ि स रु ि श न रु संक्षिप्त रु ि ि
 त्र द क्र प्रप तथ्याइकलाई इ , ि श , ि
 मूल्याइकन ि प्रस्तुत ि द ि ि रु ि
 विश्लेषणको ख ि
 परम्पारत सैद्धान्तिक व्यावहारिक द्वा ि श
 स ि ष ि द ि

१.८. शोधपत्रको रूपरेखा

- त्र न ि , ट से - इ ि इ प्रस्तुत
 त्र रु ि म ि च रु ि ि :

- १) परिच्छेद एक - शोधपरिचय,
- २) परिच्छेद दुई - लोकगायक झलकमान गन्धवको जीवनी,
- ३) परिच्छेद तीन - लोकगायक झलकमान गन्धवको व्यक्तित्व,
- ४) परिच्छेद चार - लोकगीतको सैद्धान्तिक परिचय
- ५) परिच्छेद पाँच - झलकमान गन्धवका लोकगीतहरूको विश्लेषण
- ६) परिच्छेद छ - झलमान गन्धवले गाएका लोकगाथाको विश्लेषण
- ७) परिच्छेद सात - सारांश तथा निष्कर्ष

क परिच्छेदका अतिरिक्त त्र न्त सन्दभ गी ि ि ष ि
 ि

दोस्रो परिच्छेद

झलकमान गन्धवको जीवनी

न प्र ि लोकसंस्कृतिक रू ख्याति प्र प पश्चिमाञ्चल
ि क्षेत्र न गण्डको ङ , कास्की ल ि
न गन्धव ि क्षेत्रमा गन्धव , ,
ख्यालो, इ इ , इ द ि र्ि
ि ि फ ऋ क्षेत्रमा
प्र गन्धव फ ि ि , स र्ि
क्ष , द्वे प्र निमित्त ि न विभिन्न क्ष
द ि , इ इ इ सकिन्छ प्रस्तुत
परिच्छेदमा न विभिन्न क्ष रू न , न स , ल ,
ख ि ि, शिक्षा-िक्ष , स न न स , ि न , व्रतबन्ध,
ि , त ि न , पारिवारिक आर्थिक स ,
स्वास्थ्य, र्ि स , क्षेत्रमा प्र प्रे , व , क्ष
ऋ स ि ि

२.१ जन्म र जन्मस्थान

न न ि . . ि
ि गन्धव (ि) ि न ि न
रू गन्धव न न स श्रे गण्डको ङ ,
कास्की ल न्द्र से ि उत्तरी .

ि क्र ि , इ व्यक्तिव जनताका लोकगायक झलकमान गन्धव,
(ि : ि ति र्ि प्रा ष ,) -

न न स न म र र
 गन्धव विभिन्न - स विभिन्न र , व्रतबन्ध,
 त रु र र र
 स र विभिन्न - र इ र
 न नक्षत्र न इ र रु
 र इ र र क्षेत्रमा ष्टे स
 न र र

२.२ बाल्यकाल

ल पूवाधको महत्त्वपूर्ण स ल
 र र इ रु न से ष
 न क्षणसम्म र र म प्र र न न
 ल शे कास्को ल र
 न प्र र सिङ्गारिएको माछापुच्छे र र
 ल र गन्धव र न स च स व्यक्ति र
 फ र प्रे फ म र गन्धव
 स र र - र न आर्थिक इ
 र न

प्र र र
 र कान्छो श्री र
 न प्र र र र र र , जनताका लोकगायक झलकमान गन्धव (र)
 र र र र र र ,) , -
 र र र र

व न
 व न
 व न
 व न

२.३ पुर्ख्याली र कास्कीको बसाइ

गन्धव व न रु पुस्तौदेखि कास्कीको स
 न पश्चिमाञ्चलको न्द्र से कास्की ल उत्तरी
 पे न खीी स :
 गन्धव फि . . . फि प्र फ खीी स
 - ल खीी स
 दिनहरू फि फि
 गन्धव फि । फि . . .
 फि ल । फि न फि द फि ज व
 प्री फि त स फि . . . स फि प्र स
 फि फि . . . फि: फि फि द
 स कमचारीका रु फि के फि फि स । ।
 श्री त फि . . . । इ
 सं फि । फि फि । फि . से स न
 स फि स व फ पुर्ख्याली स ते

फि फि .

स

कार्तिकपुरमा
बासिन्दाको रु

२.४ शिक्षादोक्षा

गन्धवले शिक्षा गन्धवले
ल फ शिक्षा प्राप्त शिक्षा प्राप्त शिक्षा
रु शिक्षा प्राप्त शिक्षा प्राप्त शिक्षा
शिक्षा शिक्षा शिक्षा शिक्षा शिक्षा
द गन्धव त स द ख न शिक्षा
फ शिक्षा शिक्षा शिक्षा शिक्षा शिक्षा
शिक्षा शिक्षा शिक्षा शिक्षा शिक्षा
बाध्यात्मक परिस्थिति न शिक्षा चिन्ने शिक्षा
शिक्षा शिक्षा शिक्षा शिक्षा शिक्षा शिक्षा
न गन्धव निम्नवर्गीय शिक्षा शिक्षा शिक्षा
शिक्षा शिक्षा शिक्षा शिक्षा शिक्षा शिक्षा

२.५ जीवन संस्कार

शिक्षा शिक्षा शिक्षा शिक्षा शिक्षा शिक्षा
शिक्षा शिक्षा शिक्षा शिक्षा शिक्षा शिक्षा
व्रतबन्ध, त स रु न ब्राह्मण न शिक्षा शिक्षा शिक्षा
स विभिन्न शिक्षा शिक्षा शिक्षा शिक्षा शिक्षा
न शिक्षा शिक्षा शिक्षा शिक्षा शिक्षा शिक्षा
शिक्षा शिक्षा शिक्षा शिक्षा शिक्षा शिक्षा

२.५.१. जन्म संस्कार

गन्धवहरूले स रु : हिन्दू ि
रु ि ि , क्री स रु हिन्दु
स प्र ि न गन्धव ि ि न वित्तिके - ट
प्र ि रु ि : ि ि
र - इ - इ
ि प्र -प्रे न न न
ि ि रु ि गन्धव
न ि न ट ि रु
न ि न गन्धव ि ि न वित्तिके ब्राह्मण
ज ि नक्षत्र नक्षत्रको ि ि अर्निष्ट ि
ि ग्र स्वस्ति ने ि ग्र ि
प्र ग्र ट

२.५.२ छैटो तथा न्वारन

ि न न न ि स गन्धव ि ट न
ि ि प्र ि : गन्धव ि न त्र ि
: गन्धव ि ि ि ज ि प्र
ि ि न रु ऋ न त्यसर्पाछि ट
ते ि ि
इ ि विभिन्न रु ट

ि अन्यहरू, 'गन्धव लोकवाता तथा लोकजीवन' (ि : ि र ि
,) ,

गन्धव ि ि रु न ि रु ि
 न गन्धव न ि ि
 ि ि ज्योतिषीले ि नक्षत्र ि ि इ
 ि न न ि महिलाहरूले रु
 इ न

२.५.३ व्रतबन्ध

हिन्दू ः ि ख स स व्रतबन्ध ि गन्धव
 जातिहरूको महत्त्वपूर्ण स ध गन्धव व्रतबन्ध स , , ,
 , ि रु ब्राह्मणद्वारा ि न रु ष उ
 न ि ि ि प्र गन्धव व्रतबन्ध
 ि न ि ि ि न
 न व्रतबन्ध ब्र ः ि न

२.५.४ विवाह

न ि रु स गन्धव ि ि ि महत्त्वपूर्ण
 स रु ि न गन्धव ि ि
 ि व ि गरिदिन्छन्। ि ि ि
 ि न ि क ि ि ि न त
 ि ि ि क्र ि ि मं न
 ि व

गन्धवको ि ि ि . . व ल स फ
 । । गन्धव स ।
 श्री । न न । ।
 श्री ि . . ि ि ि ि
 द श्री त ि ि गन्धव ।
 ि । ि ि स कमचारीको रु ि
 ि ि . . कार्तपुरमा स । न
 ि । इ सं ि सं ि
 गन्धव स न न ि न । इ ि ि
 द न

२.५.५ मृत्यु

न ि त ि ३ त ि स ि ि न
 गन्धवहरूको ि त २ ि विधिविधान न्त छ ि न
 न त ि . . ि ।
 स । से प्रज प्राङ्गणमा ।
 प्रि ने श्र - , श्रद्धाञ्जली त्र
 रु ि । ि हिन्दु स न्त छ ि
 न हिन्दू धमसंस्कार ते ि
 गन्धव स इ ि न
 अन्त्यष्टी ि ि त्र विशिष्ठ व्यक्ति,
 रु, , त्र रु, ि कायकता, साहित्यकार,
 । स प्रि ि ि रु स्वर्गीय प्रति श्रद्धाञ्जली

इ

कि ि ,

ब प्र । क्षेत्रमा ि : गन्धव
 ष्ट्रे ख्याति प्रप व के त न त्र गन्धव
 स त्र ि । ष्ट्रे स प्रप ि

२.५.६ श्राद्ध

प्रत्येक ि ि रु ि स श्राद्ध
 गन्धव ि ि श्राद्धको ि फ ि न ज सम्पन्न
 ि न श्राद्धको ि ि । कन्याहरुलाई ि ि श्राद्धको ि
 रु व दक्षिणा ि न श्राद्धको ि ि ।
 न - न श्राद्धको ि -

न त तिथि ज ि रु प्रत्येक
 श्री श्राद्ध :

२.६ सन्तान

गन्धवका श्रीमतीमध्ये । श्री ।
 कान्छो श्री ि । । न ।
 श्री ि न रु न
 । श्री । न न त ि कान्छो श्री
 प्र न ि . . । रु । ने ,
 ि । , ि । कान्छो स न न । रु
 ि । । श्री ह
 ख । । फ ि ि फ

। : ,
 १४

म विवि ी
 ी श्री वि वि
 नो श्री ह्ट प्र न वि वि कान्छी श्री
 वि वि वि प्र प म
 म ी ी रु न
 ी रु वि रु न क्षि वि वि च क्षि वि

२.७ पारिवारिक आर्थिक अवस्था र बसोवास

न खी ी कास्की ल वि
 ने न मि वि गन्धव वि
 न व वि वि व वि
 स वि : - ी ी ष - रु
 ल ी न ः वि खी ी
 सम्पत्तिका रु वि इ
 वि गन्धव वि म ते ी वि वि
 गन्धवको पारिवारिक स्थिति न वि श्री
 प्र स व - वि गन्धव - ी
 ी वि वि वि प ी
 प वि वि - वि न ी प
 ी त आर्थिक स
 प त ी वि ः प ी
 वि सं वि ह्ट स वि न ी स

ी ी ी प्रप ी
 म

वि त वि व हिङ्गे क्र कास्को ल वि वि
 विभिन्न ल स इ , ल , , ल , म , व
 स रु वि
 गन्धव ल क्र वि
 वि . . वि द प्र वि त क्र
 वि वि वि इ
 वि . . वि वि रु वि के वि . .
 फ ट के वि वि वि
 म न वि स त वि
 वि त्र वि आधिक स ह वि कान्छी श्री
 इ त्रि विश्वविद्यालय न व्यवस्थापन वि न वि
 वि न च प वि इ वि . .
 दिएका श्री वि वि न
 वि आधिक रु पयत्न स ल वि गन्धव
 ष्टे रु ख्याति प्रप खी
 स फ
 कार्तिपुरको म वि कान्छी श्री इ वि

२.८ स्वास्थ्य

न स्वास्थ्य स्थिति न न स्वास्थ्य
 वि स स्वस्थ, - वि वि वि स ल
 श्री इय स प्र
 श्री इ

ल स्वास्थ्य स मं ि च प
 ि द म प्र रु ि
 है ि फ व के स स्थ ख ि द
 ि रु : ि गन्धव ि ि
 ि मं क ि ि ि ि
 गन्धव स्वस्थ्य प्री ि साङ्गीतिक कार्यक्रमहरूमा
 न स्वास्थ्य = स ि , ि
 इ न्त्रि ि क श्रेष्ठ रु - प्र ि न :
 गन्धव ि . . त

२.९ रुचि र स्वभाव

ि न ख रुचि क्षेत्र
 ल ि फ ल ल
 गन्धव इ ख ि
 - , ि ि क प्रप म
 अत्यन्त ि ि गन्धव ि प्र :
 रु , ि न रुचिको ि
 गन्धव साङ्गीतिक क्र सिलासलामा
 विभिन्न ल विदेशीतर भ ि न देशभित्रकै म रुचि
 ख विभिन्न ि रु रु

गन्धव ,
 ि ि ि ि ि
 ि ि

अत्यन्तं विविधं लक्षणं, स्वच्छन्दं विश्व
 गन्धवत् कोकिलकण्ठस्य विविधं, न स वि
 विविधं गन्धवत् स्वास्थ्यं प्राप्तिं वि
 धर्मं विविधं न त्र
 विविधं न रु स्वाथरहितं त्र
 स म, प्र, स प्र ते
 फ म; वि क त न व के
 वि वि शि प्र ते वि ष्ट स वि उ
 न फ वि म गन्धवत् ष्ट स :

२.१० लोकगीत क्षेत्रमा प्रवेश र प्रेरणा

कास्को ल त न प्र वि वि न
 प्रतिको त विभिन्न प्र वि स वि म
 स महत्त्वपूर्ण वि : म वि गन्धवत्
 रु विभिन्न ल वि विभिन्न वि सान्दर्भिक
 प्रसङ्गहरूलाई रु : त्यही रु न वि फ
 वि न वि क्र क्षेत्रमा
 प्र बाल्यकालदेखि अत्यन्तं, ल एकान्तप्रेमी
 व्यक्ति वि वि रु प्र थ, ,
 ल क्र वि क, रु
 वि वि वि स न विभिन्न

विक्रम वि, .

न ६

वि वि

प्र

विभिन्न तत्त्वहरूले प्र विभिन्न प्र इ त्त रु
 इ प्रे प्र ि ल ि
 विभिन्न - ल क्र क्ष
 सुन्नेहरूले प्र ि प्रे ि
 न : फ ि गन्धव रु
 प्र ि भित्रको , त ,
 क्षेत्र ि ि पूवाधमा गन्धव ि
 ि रु न ि . .
 रु ष्ट्र ि त निम्ति ि
 न ि
 ल - ल ि न
 त्रि ि न व ि
 ि
 न ि ि क्रि ि ि . . ि
 ि ि रु गन्धवले ि न
 ि ि ि न त
 ' हे ि ...' न ख्याति प्रप
 इ , ख ि रु ि ि ि

गन्धव 'कखागायन : हे बरै' जनताका लोकगायक झलकमान गन्धव, (ि : ि
 ि
 स ि प्र ि ष ,) , -
 त्रि ि अन्तवाताबाट प्रप ि (जनताका लोकगायक
 झलकमान
 गन्धव), . -

क्षेत्रमा ि गन्धव ि न फ
ि

२.११ पेसागत संलग्नता

ि श परिपूतिका ि इ न
गन्धवले फ प्र म ि
गन्धव इ ि ि न ि
क्र ि . . ि ि ि स ि ल
इ ट म गन्धव
, इ ि जागिरेसम्म रु
ि ि गन्धव ि . . ि ि , ख्याली,
रु इ न ि ि त्र
ल प्र ल ि विभिन्न ि न्त्र
क्र ि

२.१२ भ्रमण

क्षेत्रका वरिष्ठ रु ि ि गन्धवले
भित्रका विभिन्न ल ि भ्र फ म
व न
त लम्जुइ, व इ, स इ , ल ि गन्धव
ि स कमचारीको रु छ ि ि

ि पत्रिका ि अन्तवाता (जनताका लोकगायक झलकमान गन्धव),
. . .)

विभिन्न स भ इ ि कार्यक्रम प्रस ि सिलसिलामा
 प्र : प्रन , , स्वीट्जरल्याण्ड, ले , फ्रन , स ि रु स
 रु भ ि ि . . ि त
 ि ष स , स्वीट्जरल्याण्ड, ले , फ्रन , स ि
 ि - इ ष ि संस्कृतिको महत्त्व
 भ उद्देश्य , सांस्कृतिक ष
 ष्ट ि लोकसंस्कृतिलाई - ि प्र प्र न

२.१३ सम्मान तथा पुरस्कार

इ ि ि - ि ख्याति प्रप
 न विभिन्न - स ि विभिन्न म
 स प्र

२.१३.१ सम्मान

ि त्यस्ता ि ि प्रो ि म
 ि न न ि स ि विभिन्न म प्रप
 न म स क्ष ि स ि गन्धव
 प्र ि ि न
 न राष्ट्रव्यापी प्र ि प्र
 ि त ि न्द्र ि स्वण ि रु
 स सम्मानपत्र ि

श्रं इ ,
 क्रि ि ,

ि पत्रिका ,

इ ,

न प्र स , ह ि , न , ि , (ि , ')
 स स ')

क्षेत्रमा : वि म त्र नि त्रि म

प्र

) क्ष क कातिपुरद्वारा म त्र

) वि (ति त) त्र, ,

) वि ा त्र, ,

) म ,

) वि ा सि वि नि त्र, ,

) सि नि त्र, ,

) वि अभिनन्दन त्र, ,

) लि प्र.वि. म त्र,

) स म म त्र,

) प वि रेण्डुरेन्ट, नि त्र,

) वि , म ,

) क , त्र,

) सि सर्माति, प्र त्र,

) गन्धव सि , नि त्र, ,

) न । द्वैमासिक पत्रिका, म त्र, ,

) , म त्र, ,

) वि , सम्मानपत्र, ,

) क , म त्र,

) वि , त्र, ,

) वि , म त्र, ,

) वि द रु ा वि नि ,

गन्धवले प्रप म रु ए ।
 न न म न रु न ।
 संस्कृतिप्रति : पयन्त ख ि त
 श ि . . ख ।। स । ि ि
 ि

२.१३.२ पुरस्कार

न ि । गन्धव संस्कृतिको प्र द
 इ ि । इ क्षेत्र ि राष्ट्र के
 । ि ि स
 ख न विभिन्न -संस्थाहरूले विभिन्न म
 स प्र
 ि . . । प्रतिष्ठानबाट प्रप ि न्द्र ज क्ष प्रजा
 स स्वर्गाय विरेन्द्रबाट प्रप ि
 ि . . ि ि क स्मृति स प्राप्त ि
 ि . . ि ि (इ) स द सम्मानित
 न प्रप म पुरस्कारहरू ।
 संस्कृतिमा ि ष्ट्रे त्त रु ि न

२.१४ निष्कर्ष

ि . . कास्की ल से चे
 न न ि ि । ि
 न रु न गन्धव । क्षेत्रमा वरिष्ठ
 रु ि ि गन्धव प्रख्यात ख

त्रि ि अन्तवाता,
 गन्धव,
 न अन्यहरू । गन्धव (ि : . . .प्र,),

गन्धव इ मानिसहरूले त्र

ल गन्धव प्र

व न
गन्धव स ,
रातिरिवाज हिन्दू स र न र
ल स फ । ।
। श्री र र . .
कातिपुरमा स । न र । इ
स र न श्रीमतीमध्ये । श्री
। कान्छो श्री र । । स न
ल इ ट स
गन्धव , इ र जागिरेसम्म
इ र क्र प्रस्तुतिको सिलसिलामा विभिन्न ल रिक
प्र : प्रन , , स्वीटजरल्याण्ड, ले , फ्रन , स र रु स
रु भ र
न इ ल इ विभिन्न ।
न , स रु विभिन्न स , प्र त्र, त्र, ज , न
अभिनन्दनपत्रहरू प्राप्त । क्षेत्रमा र
न त र . . र ।

सं चि

झलकमान गन्धवको व्यक्तित्व

व्यक्तिको त के त विभिन्न रूप
निमित्त न व्यक्तिले त के
व्यक्तित्वको निमाणको स ए न त के त निमाणमा पारिवारिक, सांस्कृतिक,
वि, वि स विविध वि, क्षि स, वि, र्ण,
, वि इ जीवनप्रतिका दृष्टे स क्ष रू महत्त्वपूर्ण वि
न
त के वि त वि व्यक्तित्व वि
व्यक्तित्वको स ह सावर्जनिक व्यक्तित्वमा प्र व्यक्तित्वले
वि प्र न वि, वि -स ज वि
न वि वि वि

३.१ शारीरिक व्यक्तित्व

त के रू इ, वि प्र वि त के त
वि न न, वि,
ल त के त वि प्रश्न देखिन्छन्। न
वि वि न वि प्र : वि न
वि, न वि न हिडाखेरो प्र
वि वि इ वि क्र, - स, ,

न हि न ह
त्त हि

३.२ आन्तरिक व्यक्तित्व

हि न हि त के त अन्तर्निहित , स ग
महत्त्वपूर्ण कायहरूसँग मद्ध न न द्र, ल, न प्र न हि
, हि ष प्र हि रु, - त ी
चिन्तन न हि हि हि त के हि म
मिठासपूर्ण ी प्र : त त रु
म ल न न ईश्वरप्रति स ख
त त त के रु चिनिच्छन्। व
रु हि न न हि त
इ ल हि त के ी ल हि
हि न न , न हि
व्यक्तिहरुका हि मे प्रिय त्र न
ी हि कि ी, रु ी त्र इये
क स हि न क्ष
क क हि रु मं

श्री श्री प्रप ी

हि क

श्री

हि

हि

त गदन्थे। ि ो क्षेत्रमा ि
 न ो ि गन्धव ो इ त के त

३.३ धार्मिक व्यक्तित्व

न धमप्रति स ख न ि न न
 स ि न ि ि विभिन्न इ कायहरूमा ि
 स ि ो रु फ म ि , ि , ;
 ि स न फ
 क्र श प्री स श विभिन्न प्र ि
 ि ल ि त
 ि ... स ि न धमप्रति स ि न स
 ि ि न ि व्यक्तित्वको रु ि न ि न

३.४ समाजिक व्यक्तित्व

ि प्र क व्यक्ति
 म ने क त के त गन्धवको विभिन्न
 स व त के त प्र षे न
 गन्धव ि स स व ि फ रु ि
 ि त के भित्रका विभिन्न ल
 रु ि ि द्वि म्प्रे
 ि न
 : गन्धव ि रु - स च स
 ि प्रै स क्र स : स्फूत रु
 च ि न

3.4 गायक तथा सङ्कलक व्यक्तित्व

न व्यक्तित्वहरु ए न परिचित व्यक्तित्व
इ व्यक्तित्व ल स फि ,
, स इ , ल , ल विभिन्न फि । ल गन्धव
प्रप फि फि स फि स त स , व
विभिन्न रु इ गन्धव ि फ
फि म न व इ कणप्रिय ि
श्रीताहरको त क फि स
इ प्र फि फि । न ि ल
फि न फि . . फि
प्रफि फि मे फि प्र स
फ फि , ए फि
ने , न त्र फि ल प्र फि
फि ल । ल इ फि
, म सरु संस्कृतिकर्मा इ कार्तिपुरको
म इ
न र्चचित रु ' फि ' , ' ल ' , ' ,
' , ' म न ' , ' , ' ,
' , ' । ' , ' , ' फि , ' ,
स ' फि साङ्गीतिक क्षेत्रमा सङ्कलनकता
रु । इ फि फि सुपरिचित फि

जवाला, लोकगायक झलकमान गन्धव र कखा गायन, (फि : ,) . -
फि फि 'लोक सङ्गीतका अनुकरणीय व्यक्तित्व' जनताका लोकगायक झलकमान गन्धव,
(फि : फि फि रु फि प्री ष), -
प्र 'लोकसङ्गीतका उज्ज्वल नक्षत्र' जनताका लोकगायक झलकमान गन्धव, (फि :
फि फि रु फि प्री ष ,) , . -
जवाला, ममस्पर्शा भावमा आमाले सोधिलन् नि गीत', म (फि : पश्चिमाञ्चल इ
विद्यार्थी ,) . -

जिम्मेवारी । इ क्षेत्रमा ब
, ब र्ति म इ प्रे ह
प्र , स , र्ति प्र , ज
प्रे ह , र्ति न्द्र ल , ल
, इ र्ति इ , न्द्र इ
न , र्ति ष र्ति त्र म
। र
न र्ति ल ज प्र : रूपा
, र्ति र्ति मिचिसकेको त क
, र्ति : ग इ ल
, र्ति र्ति न र्ति
, न से रु श्री न म ने र्ति
क्ष न र्ति र्ति फ
(गन्धव) इ र्ति ने क्ष
, र्ति प्र म ने संस्थाहरूले र्ति लोकगीतप्रति
, र्ति प्र
न । रु क्ष प्र प्र र्ति
विभिन्न ल , स , रु विभिन्न
प्र , , ख्याली इ र्ति इ र्ति ।
, र्ति क्ष , र्ति र्ति महिना इ
ट र्ति र्ति र्ति , र्ति - त

इ सिजापति, 'झलकमानको झलक' जनताका लोकगायक झलकमान गन्धव, (र्ति :
, र्ति र्ति र्ति प्रि ह ,) , -

, झलकमानको आरबाजा, जनताका लोकगायक झलकमान गन्धव, (र्ति :
, र्ति र्ति र्ति प्रि ह ,) , -
इ र्ति र्ति ,

विभिन्न
 , स्त्री , ले , फ्रन
 फ साङ्गीतिक प्रस्तुति ि क्ष प्र
 : फ म गन्धव , ि प्रस्
 न

३.६ कमचारी एवम् बादयवादक व्यक्तित्व

म रु इ - ल
 ि ि ल ि न ि प्र ि
 ि ि . . ि ज व
 प्र ि न प्र स प्र ि
 द प्र ि त ि न्द्र के ि स रु
 ि . . ि : ि ि द () स
 ि द रु ि रु न ि
 विशिष्ठ श्रे रु ि . . म ि चिल्लो
 इ ि ि ि त ि
 इ ि पूवदिमा

जे , जनताका लोकगायक झलकमान गन्धव, (ि : ि ति
 स्त्री प्र ि ष ,) , -
 जवाली,
 न प्र व , 'खुसीले मेरा खुष्टा भुँइमा थिएनन्' जनताका लोकगायक झलकमान गन्धव,
 (ि : ि ति स्त्री प्र ि ष ,) , -
 जवाली,

न र्ति र्ति ट इ न ।
 र्ति , र्ति राष्ट्रियता क्ष निमित्त देशदेशान्तरसम्भ
 । क्षेत्रमा र्ति र्ति रु न
 इ र्ति र्ति र्ति र्ति र्ति
 ख र्ति र्ति इ र्ति ल क
 र्ति क व्यक्तिहरूको

३.७ अन्य व्यक्तित्व

गन्धव र्ति न गन्धव । ष्टे प्री
 र्ति न र्ति ल न र्ति न फ र्ति
 - , , त रु सक्रियरूपमा न र्ति र्ति
 । र गन्धव प्र न्त्रे रु
 गन्धव इ , प्र र्ति न
 र्ति र्ति , त विभिन्न प्र इ
 र्ति इ न र्ति
 प्र र्ति रु र्ति सांस्कृतिक, र्ति र्ति , र्ति , र्ति ,
 क त के त र्ति न

३.८ झलकमान गन्धवको जीवनी, व्यक्तित्व र लोकगीतका बीच अन्तः सम्बन्ध

गन्धव । क्षेत्रका र्ति र्ति व्यक्ति
 र्ति इ , प्र निम्ती र्ति प्र र्ति
 रु न न ल र्ति द
 त , र्ति आधिक र्ति कान्छी
 ल्याएपाछ निमित्त ल र्ति र्ति

र्ति ,
 र्ति ,
 र्ति ,

प महत्त्वपूर्ण । इ ख ।
 ल । न म स ।
 । , इ प्र प्र । न । न
 प व के त प्रस्तुत । :
 व द , इ रु । रु
 किसिमको शिक्षा ग्र न इ । इ क्र
 । विभिन्न , व्यक्ति । ज ।
 । । । द । उ व प्रा ।
 प्र स । । गन्धव ष्टे स रु ।
 । प्र फ ल । इ ,
 व के क्ष । व के ।
 न प्र फ इ , न
 । ।
 इ , ख । रु । । ।
 क्षेत्रमा । गन्धव । श्रे । न न
 प । ।
 । क्षेत्रमा । न । गन्धव ।
 । । न , इ , खयाली,
 । इ फ इ ,
 प्र निम्ती । गन्धव विभिन्न स द म
 स न व के त अन्तर्निहित

प ,
 त्रि । न प्रप । (जनताका लोकगायक झलकमान गन्धव,
)
 जवाली,

।

३.९ निष्कष

म वि त प्र न विविध
 व्यक्तित्वहरू देखिन्छन्। रु ि वरिष्ठ रु ि
 गन्धव न गन्धव , इ , ख्याली ,
 इ द रु ि न स गन्धव
 ि , । प्र :
 ि रु रु प्रस्तुत क गन्धव
 इ , द । व्यक्तित्वको ग क्षेत्र ि
 ष्ट्र , अन्तराष्ट्रिय ि ि ि फ भित्रको
 श्रं

- ढ क श्रुति
 त प्रि ि रु स ि
 दि इ , रु , , स , न ि
 ि स क्ष न क्ष ि न

४.२ लोकगीतको परिचय र परिभाषा

ि त न लोकप्रिय ि ढ
 ढ न ढ न
 ढ 'न्यात्मक' । ि त के साहित्यिक ि
 स्रष्ट ि ह
 स स , त अभिव्यक्ति
 श्रुति म रु पुस्तादेखि ि स म
 विभिन्न सन्दर्भ, प्र इ त रु प्रतिबिम्बित
 ष म रु ि श त विद्वानहरूले लोकसाहित्यको ि
 ष । महत्त्वपूर्ण ि द विशेषज्ञहरूका ि ढ ष
 न ि न

लोकगीतको परिभाषा गद पाश्चात्य विद्वान पेसा - "आदिम स्वस्फूर्त सङ्गीतलाई नै लोक गीत भनिन्छ"।^३

न्यु इन्टरनेसनल इड्लिस डिक्सनरीका अनुसार "जनसामान्यका बीच प्राचीन कालदेखि लयात्मक रूप र भावनामा सहज किसिमले प्रस्फोटित अवैयक्तिक रचनालाई लोकगीत भनिन्छ।"^४

लोकगायक एवम् अध्येता धमराज थापाले "चोखो लय र शब्दको प्रभावबाट उठे जनजीवनलाई प्रभाव पान सक्षम भएको छ भनेका छन्।"^५

खगेन्द्र , लोकवाताविज्ञान र लोकसाहित्य, (ि दि ि स ण ,
), .
 , गण्डकाका सुसेला (ि : . प्र.प्र .,) .

चुडामणि बन्धुका अनुसार "लोकगीत भनेको लोक जीवनको रागात्मक स्वतःस्फुट लयात्मक अभिव्यक्ति हो। यसमा लोक जीवनका दुःखसुख, आँसुहाँसो, आशा निराशाका साथै लोकको चाल चलन, विधि व्यवहार, आस्था र मान्यताहरूको चित्रण हुन्छ।"^६

१ सत्यमोहन जोशी "लोकगीत भनेको त्यो सङ्गीत वा गीत हो जुन मानवसमाजमा मातृभाषाको नाताले मानिसहरूमा नैसर्गिक रूपले सुख र दुःखको अनुभवमा दया, माया, प्रेमभाव अभिव्यक्त हुने बेलामा स्वयमेव उद्गारको रूपमा लयदार, काव्यमय शैलीमा निस्कन्छ।"^७

कृष्ण प्रसाद पराजुलीका अनुसार "लोकगीत लोकहृदयको स्वस्फुट सुकोमल लयात्मक अभिव्यक्ति हो।"^८

राल्फ भी. वालियमका अनुसार - "लोकगीत नयाँ वा पुरानो नभई वनको वृक्षजस्तै हुन्छ। यसका जरा अतीतमा गाडिएका हुन्छन्, तर यसले लगातार नयाँ हाँगा, नयाँ पात र नयाँ फलहरू उत्पादन गरिरहन्छ।"^९

विभिन्न वि रु वि त
 वि अभिव्यक्तिमा प्रस्तुत के वि वि
 वि र, स वि व्यक्ति वि - प त्र
 वि वि वि म विभिन्न विद्वानहरूका
 वि क्ष वि क्ष
 वि त, वि के, ब्र, वि,
 त, विश-व वि वि न
 श्रुि म वि, - स वि स म
 महत्त्वपूर्ण वि - : , वि स, - ,
 प्रे, वि द वि व

१ न्द्र वि वि, . २५।
 सत्यमोहन जोशी, 'लोकगीतको केही झल्का, प्रगत (वर्ष ३, अङ्क २, पूर्णाङ्क १४, २०१२) पृ. १४५।
 ६ प्र १, नेपाली लोकगीतको आलोक, (वि: प्र,), .
 ऐजन्, पृ. ६७।

४.३ लोकगीतका विशेषता

श्रव्य न त, त
इ त प्र स
त ।
त न । न तत्त्वहरू ।
। ल क्र ।
रु । :) गीतमा तीव्रता वा लयालुपना हुनु, ख) सरल, सरस र प्रभावलो
अभिव्यक्ति तथा शब्दव्ययास हुनु, ग) सावजनक मौलक संवेग पाइनु, घ) सूक्ष्म
विश्लेषणको अपेक्षा प्रभावोत्पादक स्थूल चित्रण हुनु, ङ) कृतमता नहुनु, च) स्थान र
सामायिकताको प्रभाव । अन्तर्निहित ,
प्र । । फ सम्पत्तिको रु स
न त । , परिस्थिति रु प्राभावपूर्ण ।
अभिव्यक्तिगन क । न
। न कृष्णप्रसाद । ।
। श न । क) अज्ञात रचयिता ख) सामूहिक भावभूमि,
ग) सहजता र स्वभाविकता, घ) मौखिक परम्परा, ङ) मौलकता र सरलता, च)
कथनाविवधता । ल न
त्यस्तै । । । जीवेन्द्रदेव । ।
ल रु क) विषयगत विवधता, ख) भावगत
तीक्ष्णता, ग) गयता, घ) अज्ञात रचयिता, ङ) स्वतःस्फूर्त अभिव्यक्ति, च)
परिवर्तनशीलता, छ) मौखिक परम्परा, ज) सरलता, झ) संक्षिप्तता, ञ) स्थानीयता, ट)

।, नेपाली लोकसाहित्यको विवेचना, (।: ठु क्र विकासकेन्द्र,

वि. । ,) , .

५ प्र ।, , . -

सङ्गीतको साहचय, ठ) साहित्यिक विशेषता, ड) मङ्गल पुकार । । रु ।

विभिन्न विद्वानहरूले । । रु । । म ।
प्र । ष । न

४.३.१ अज्ञात रचायता

श्रु । म । ढ । स । च । न । ज ।
न : ग्र । स । स । अभिव्यक्तिका रु । ।
। । । त । । । : ।
म । ष । न । व्यक्तिले रु । । त ।
प्रचलित । । त । के । व । किसिम । । । ।
म । ते । न । व । । लिपिबद्ध ।
महत्त्व । न । स । । । । न ।
। । । ज । । । ।

४.३.२ मौखिक परम्परा

फ । इ । । स । रु । । श्रु । म । ।
। । म । पुस्तान्तरण । न ।
ब्र । । ब्र । । । । । । । ।
। । । । प्र । । । ।
म । । । । । न । । । रु । । ढ ।
प्रक्रिया । ।

४.३.३ सामूहिक भावभूमि

। न्द्र । । ।
। । । ।
। । । । । ।

व्यक्ति कि केन्द्रीयतामा त्रि वि
 अभिव्यक्तिको दृष्टि बौद्धिकताको हृदि त्रि
 प्रक्षेत्र न
 त के त के श्रृङ्खला त म द रु वि न
 ले न वि ट क के न
 अभिव्यक्तिगत त्रि वि से वि
 वि न रु , प्रे , म , , परिश्रम
 वि न वि वि
 वि वि

४.३.४ मौलिकता र सरलता

क स च , अभिव्यक्तिगत
 वि न फ वि वि क न प्रयुक्त
 ह द इ ट क ः प क्ष
 प्र द वि रु सरु वि ह न

४.३.५ स्थानीयता

वि श्रे स स वि त क्षेत्रको वि वि
 न स , वि , स वि , , त्रि वि
 वि त ग्र न म ने क्षेत्र
 स वि न प्र वि वि

४.३.६ लयत्मिकता

त सङ्गीतिकतालाई वि वि वि न
 त क न स न न

प वि , . .
 वि वि , . .

स न न व्र ि न क , क
 ि ि ि , इ ि
 स्त्रं परिपाटोको स्वच्छन्द प्र न , 1,
 इ ि विभिन्न वादययन्त्रको प्र सङ्गीतपूण न

४.३.७ स्वच्छन्दता

ि ि ि स्त्रं ि न स्वतन्त्रपूर्वक
 ि क ि अभिव्यक्ति ि
 स्त्रं ि -ि द म न , इ ,
 ि ल म ि द
 फ ि ि : न क त्र
 स ि रु अभिव्यक्ति क ि स्वच्छन्द न

४.३.८ विषयगत विविधता

विभिन्न विषयवस्तुहरूलाई न
 स स , स ि , प्र ि स प्रतिनिधित्व
 न न ि त म विभिन्न स , , , ,
 , रीतिरिति, चिन्तन, , न ि
 क्रि ि ि ि रु न 1 ट ि स
 ि ि ि ि न
 ि स , 1, क्षेत्र विविध
 रु ि रु प्रष्ट ि न

४.४ लोकगीतका तत्त्वहरू

•
 •
 •

विधाहरूमा स विभिन्न तत्त्वहरूबाट वि न स रू
तत्त्वहरू वि क वि विभिन्न त रू
से वि वि न वि त्त न वि प्र
त्त वि न त्त इ , , वि
वि न फ त रू सिजनात्मक रू
वि त श अन्विवायता वि न फ विशिष्ट
वि वि न वि न न
ज न , श्रुि म वि न वि
वि ट के वि न प्र वि ट के
परिवतनशीलता इ न त्यस्तै त सङ्गीतात्मक वि
स च प्रकृतिका स वि प्रभावकारितालाई वि वि न
म स स ते वि इ उत्पन्न न
वि वि रू ममस्पर्शा प्रभावकारी इ त रू
प्रार्थमिककता वि न तत्त्वहरूको म न विभिन्न विद्वानहरूले -
फ वि ट क

वि ट ष कृष्ण प्रसाद पराजुलीले क) संरचना, ख) लय, ग)
गेयता, घ) कथनपद्धति, ङ) भाषा, च) भाव आदि गरेर ६ ओटा बुँदामा विश्लेषण गरेको
पाइन्छ।^{११}

वि श चूडामणि बन्धुले वि त्त रू
क) भाषा, ख) कथ्य, ग) चरन वा पद, घ) स्थायी र अन्तरा,
१) रहनी र बथन, च) लय र भाका वि

११ प्र. वि, . . .
वि न , नेपाली लोकसाहित्य, वि : क , . . .

विश्लेषक मोतीलाल पराजुलौ र जीवेन्द्र देव । । ।
तत्त्वहरूलाई प्र ल ि न रु

क) विषयवस्तु, ख) भाषा, ग) भावसन्देश, घ) लय वा भाका, ङ) स्थायी र अन्तरा,
च) लोकतत्त्व ।

मोतीलाल पराजुलौ त्त् रु ख
। ल ल तत्त्वहरू प्र न ि श
न क) कथ्य विषयवस्तु वा भाव, ख) भाषा, ग) स्थायी,
अन्तरा र थैगो, घ) लय वा भाका, ङ) सङ्गीत त्त्

विभिन्न विद्वानहरूले ।
तत्त्वहरूलाई । ऐ । ि म प्र ल ि न

४.४.१ अनिवाय तत्त्व

४.४.१.१ विषयवस्तु वा भाव

विभिन्न प्र इ , स रु ङ ।
स ि न ' इ , प्रे , रु , त , के ि
। , , ि , , प्रकृति ि ि न
त क न ' , ि अन्तक्रियाद्वारा ि
न प्र ि ि ि :
; , त ि त , इ , ि , ि प्रसङ्गहरू
। न ि त क श सम्प्रेषणीयता
दिन्छ। । ि ि न त्यस्तो ि ,
। , ि , ि ि , ि , जर्जा , आर्थिक ि ि

। ि । , . -
। , ' , कुन्जिनी, (: ,) , .

उ प्र देश ि ि न - -
 उ रु ि न । रु प्र ।
 देश ि ि न स ि अभिव्यञ्जित
 न

दुश्मनका गोली न शरैमा लन्दा सम्झयो बाबु आमा र

आसना जस्ता न गोलीले रणमा परी मारछन लागुरे

ि न । ि आर्थिक बिपन्नताका
 रु । व स ि क्ष निम्ति ि
 ि त् ए न परिस्थितजन्य पारिवारिक स स
 रु रु प्र । त न ि

४.४.१.४ लय वा भाका

विशिष्ट ि त त्त रु
 ि न ए ि रु त्र क्र ि , न ि इ
 ि । ि श
 ि ट क ि न ि क श
 त ए द अभिव्यक्त न हृष्ट श
 स ि ि त्त न : प्रत्येक ि श्
 त्र अर्द्धविश्राम श्रि व स ि न ल
 ल ि न इ ि ढ न
 त ढ ि प्र ि न , बान्का न
 इ , , ि , न , ल ।
 ि ि न

४.४.१.५ अन्तरा

। , .
 । ि । .

प्रत्येक रु ि शे पङ्क्ति रु ि
 न ि त न रु ल ि न
 न ि त्त रु न स
 न न त्र ख
 प्रस्तुत न न ख ि स ि न

४.४.२ ऐच्छिक तत्त्व

४.४.२.१ सङ्गीत, बाद्यवादन र नृत्य

ध्वनि इ रु द उत्पन्न न स क
 अभिव्यक्ति इ स इ धि रु इ ि इ उत्पन्न न
 इ न : किसिमबाट उत्पन्न न न ि इ ह
 इ प्र ध्वनितरङ्गहरूको द उत्पन्न
 न बे ि ट के न ि इ द रु प्र ि
 रु न ि इ त्र न न ि इ ि कि द ि स
 ध्वनि इ बे स रु ह इ न ि इ
 उद्दिप्त ह इ इ स
 ि न श ि क ि ि ि प्र
 रु प्र स

४.४.२.२ स्थायी

क्र - ि इके स ि न
 स ि स धु
 ि ि न प्र : रु स ि रु
 स ि

। न्द्र ि ।
 ।
 ।

४.४.२.३ थगो \ रहनी

चिन्ताकषक ल
स र्भिनिच्छ म, द श र्भि क
क र्भि क र्भि र्भि क प्र त
आलङ्कारिक र्भि न र्भि र्भि , ब र्भि
रु र्भि क स - , ... , र्भि
अनिवाय श त्र र्भि दै त्त
क तत्त्वहरूले र्भि तत्त्वहरू
दै अनिवाय र्भि र्भि क त ष
न र्भि ल र्भि त्त र्भि र्भि स
र्भि न

४.५ लोकगीतको वर्गीकरण

ति र्भि त्र न र्भि र्भि रु द न व र्भि
महत्त्वपूर्ण र्भि र्भि फ न र्भि त क्षेत्रको
न र्भि र्भि र्भि र्भि न
र्भि न स्वरूपको र्भिभिन्न र्भि र्भि न
म न र्भिभिन्न विद्वानहरूले - र्भि र्भि र्भि
न

धमराज थापा र हंसपुरे सुवेदीले

प्र र्भि र्भि

क) सामान्य गीत, ख) संस्कारगीत, ग) ऋतु वा व्रतसम्बन्धी गीत, घ) कमगीत, ङ) पवगीत, च) नृत्यगीत वा लोकनृत्य र छ) विविध र्भि र्भि

कालीभक्त पन्तले

प्र र्भि र्भि क)

राष्ट्रभाषास्तरीय, ख) जिलास्तरीय, ग) ग्रामस्तरीय, घ) जातिभाषा स्तरीय, ङ)

पर्वस्तराय च) लोकनाट्यस्तराय, छ) कायस्तराय, ज) जातिस्तराय, झ) ऋतुस्तराय

ल

कृष्ण प्रसाद पराजुली । जातीय, क्षेत्र, उमेर वा लिंग, कायवस्था,

स्वरूप र प्रस्तुतका दृष्टे । त । प्र ।

। । त न वषचक्रीय जीवनचक्रीय । प्र

। वषचक्रीयअन्तगत ह । ट

। अन्तगत । क्री

न स , । , स । त

चुडामणि बन्धुले । , प्र

। प्र । । । ,

स ष , श्र ।

मोतीलाल पराजुली र जीवेन्द्र देव गिराले । , ।

, प्र इ । ।

रु । क) श्रम गीत, ख) प्रेम गीत, ग) शोक गीत, घ) संस्कार

गीत, ङ) भक्ति । त्यस्तै प्रकायका क)

सामान्य गीत, ख) विशेष गीत रु इ

क) गेयगीत, ख) वाद्य गीत, ग) नृत्य गीत ।

विभिन्न विद्वानहरूले । क रु निम्नलिखित प्रकारहरूबाट

। सकिन्छ :

। क न , हाम्रो सांस्कृतिक इतिहास, . . (। : स ,) ,

ष प्र । , -

। न , . -

। । । , . -

४.५.१ विषयका आधारमा

विषयका आधारमा विभिन्न विषयहरूमा लेखिएका गीतहरूलाई विभिन्न श्रेणीहरूमा बाँड्न सकिन्छ। यी गीतहरूलाई निम्नलिखित प्रकारमा बाँड्न सकिन्छः

क) धार्मिक गीत

यसमा भक्ति, भजन, मन्त्र, व्रत, श्रद्धा, प्रार्थना, इत्यादी विषयहरू समावेश छन्।

ख) संस्कार गीत

यसमा जन्म, मृत्यु, विवाह, अन्तगतामा, श्राद्ध, मालसिरी, केन, इत्यादी विषयहरू समावेश छन्।

ग) श्रमगीत

यसमा श्रम, कर्म, श्रद्धा, इत्यादी विषयहरू समावेश छन्।

४.५.२ क्षेत्रीय आधारमा

विशेषरूपमा प्रत्येक क्षेत्रमा विभिन्न विषयहरूमा लेखिएका गीतहरूलाई विभिन्न श्रेणीहरूमा बाँड्न सकिन्छ। यी गीतहरूलाई निम्नलिखित प्रकारमा बाँड्न सकिन्छः

क्षेत्रीयताका आधारमा यी गीतहरूलाई विभिन्न श्रेणीहरूमा बाँड्न सकिन्छ। यी गीतहरूलाई निम्नलिखित प्रकारमा बाँड्न सकिन्छः

४.५.३ सहभागिताका आधारमा

व्यक्तिहरूको विरुद्ध प्रविनि
नो, नो
प्रविनि
कठिना, विनि
नो, ख्याली, विनि
, वि, वि

४.५.४ प्रकायका आधारमा

प्रविनि प्रविनि
विनि (इ, वि, इ, इ, वि)
हन्, तन्, न
, न प
वि प्रकाय न न रु वि
वि वि श

४.५.५ सङ्गीत साहचर्यका आधारमा

इ प्रस्तुति विनि रु
प्रस्तुति वादयरहित, वादयसहित नृत्यसहित इ गरिन्छ।

क) गेय गीत :

व त्र नि व
, इ , , ि , , , ि
व स

ख) वाद्य गीत :

प्र द द व ,
, रु , , व , ी ि

ग) नृत्य गीत :

त मिलने त नि त व इ ,
, , , त ी, ि , ि

४.६ निष्कर्ष

परिच्छेदमा ि , ि , ि
तत्त्वहरूलाई ि ि त महत्त्वपूर्ण ि ः श

न	ि	सैद्धांतिक रु	ग्र क्ष	द	ी
ि श			क्ष	प्र	ी
म न	विभिन्न ि द्	विशेषज्ञहरूका	रु		ि

झलकमान गन्धवका लोकगीतहरूको विश्लेषण

५.१ विषय प्रवेश

गन्धव । क्षेत्र ल ख व के त ।
 ि : गन्धव , प्र -प्र क्ष प्र
 ि न । इ । न प्र
 त स्रष्ट रु ि ि रु , ,
 म रु रु न ि रु
 ि . ि द ' हे ि ' ि
 । क्षेत्रमा ि गन्धव ि : न फ
 ि ' न ि ल रु
 रु ' न रु() ल प्र
 ल ' हे ि ...', ' ल ...', ' ...',
 ि भै । ...', ' ...', ' । ...', ' म
 न ...', ' ...', ' ...', ' , ' ।
 ल . . रु ि . प्र ि । ल
 रु हे विश्लेषण परिच्छेदमा ि सैद्धान्तिक क्ष
 न क सिद्धान्तमा न्द्रे न रु स न प्राज्ञिक
 ज ि श हे ि

५.२ आमाले सोचिन् नि ...

^१ पत्रिकाको ि
 झलकमान गन्धव, . -)

अन्तवाताबाट प्राप्त । (जनताका लोकगायक

झलकमान गन्धवले गाएका लोकगाथाको विश्लेषण

गन्धवहरूको क्ष प्र ि
 गन्धवहरूले कथ्यरूपमा ल म ि गन्धवहरूले
 रु ि ल । लोकसाहित्यका ए रु लिपिबद्ध ि
 न ि फ ि त्र विभिन्न इ
 परिच्छेदमा द्ध ने ि रु
 ि श्री न ि विधातत्त्वगत ि श ि

६.१ लोकगाथाको परिचय र परिभाषा

लोकसाहित्यका ि रु ए ि ि ि ब अत्यन्त
 प्र ि प्रचलित ब ि स
 ख ि , द ि ब प्र
 ब ि न त त्र
 विशिष्ट व्यक्तिका त ि त्र, क्र, ि स रु
 म द्ध त न बुझ्दछौं। ब ि
 , प्र ि न
 न ब प्र , ब्राह्मण ग्रन्थ, ि
 ज स ि रु ज ि - त म
 - : प्र क्र ि म ने

१ प्र ि, नेपाली लोकगीतको आलोक, (ि: प्र ,), .
 ि न्द्र ि ि, नेपाली लोकसाहित्यको रूपरेखा, (ि: प्र ,),

स न विभिन्न विद्वानहरूले - रु ट क

। प्रसिद्ध विद्वानहरूका फि म प्र

चुडामार्ण बन्धुका - त्यस्तो

फि स प्रस ी प्र रु क

प्रेन्क सिर्जाविक - म ते रु आख्यानात्मक

स न फि रु नि फि प्ठ

, फि फि रु न फि : न ,

से

इन्साइक्लोपेडिया ब्रिटानिका फि म ल फि - ज

पदयशैलीको इ फि प्र

न फि प्र फि क श फि त

क्ष फि न

कृष्णप्रसाद पराजुली - क्ष फि फि

क्ष फि न न त

प स न फि सिङ्गो क्ष त

व रु

दयाराम श्रेष्ठ - आख्यानात्मक (स प्र)

ट प्र न फि फि न

सत्यव्रत सिन्हा अनिवाय न

खगेन्द्र , लोकवाताविज्ञान र लोकसाहित्य, (फि द फि स प ,

),

फि फि ,

श्रेष्ठ , प्रारम्भिक कालको नेपाली साहित्य: इतिहास र परम्परा, (फि : ठ क फि
न्द्र,)

फि फि ,

विभिन्न विद्वानहरूले म न ि ि ।
 ति त्यस्तो ि , स प्र क्षा ि ि व
 , ि ज ि श्रुतिपरम्पराबाट स ि स
 विशेषताहरू : ि देखिन्छन्।
 त न रु म रु ि
 श्रुि म ि ज ि ि ि
 ि ि ति ि श - ति स महत्त्वपूर्ण
 ि न ि ति रु स
 ि न्द्र ि ि इ , ि म , प्र ि
 , न व ि ि , ते , ि ज स्थिति, काव्यशास्त्रीय
 ि , इ , सङ्क्षिप्तता, स ि
 ल
 रु ि ि ि , ि ि , प्रस ि ि
 स त विविध प्र ि रु म रु
 , ि , , , , ि , ,
 , ि ि ि ि ि ि : , ,
 , ि , ि ि ि प्रचलित

६.२ लोकगाथाका तत्त्वहरू

विभिन्न त् रु से ि ि न ि त
 न ि प्र त ि न त् ब
 इ , , ि ि न ि ि त् रु
 इ सिजनात्मक रु ि त्

३ अनिवायता ि न फ विशिष्ठ ि हूँ
 ि न
 त् रु सम्बन्धमा विभिन्न विद्वानहरूले हू प्र ल
 ि ो न्द्र ि ो क ि न रु
 ख त् , ि त् , त् त् , त् ि तत्त्वहरू
 न ि

६.२.१ आख्यान तत्त्व

ख अनिवाय त् प्रत्येक
 , स क्ष ि न आख्यानत्मक स रु
 प्रस्तुत न ख न प्र ि न ।
 त ः त ः ि ि ि त ज
 सत्मार्गात्तर हिँड्न प्रेरित ि , ि ,
 ऐतिहासिक, अतिप्राकृतिक, ि विविध ि स ि न

६.२.२ गीततत्त्व

, इ त अत्यन्त त प्र ि
 न त द अभिव्यक्ति ि न गीतछन्दका
 ि रु न न द न
 रु प्र ते ि विन्यासका ि
 उत्पन्न न गीतछन्दमा इ , न , ि
 ि विभिन्न त रु अन्तर्निहित न

६.२.३ नृत्यतत्त्व

नृत्यतत्त्व ि न चे त् प्र
 रु त् ि ि ि ि ि त् इ न

रु त्ति त्ति प्र , ति ति
 ति ति त्ति प्रस्तुत नि ति न प्रै ति
 न रु त्ति ति स वादयरहित ति
 ति न

६.२.४ लोकतत्त्व

लोकसाहित्यको ति न ति रु स
 ति त्ति ति न ति ति , ति ,
 विषयवस्तुलाई ति ति भिन्न समाजभिन्नका , त , ,
 - ति ति न न न ति स , ति ,
 स ति ति ति ति क न न त
 ति ति निधकसंग प्रस्तुत ति परिष्कार
 ति क
 ति ति , ति , ति , ति , ति ति जनप्रिय ति ति
 त्ति प्र त्र न

६.३ डाँफे मुरली चरी गाथाको विश्लेषण

गन्धवहरूको क्ष प्र गन्धवहरूले
 श रु ल श गन्धवहरूले रु ति ल
 ति ति श रु लिपिबद्ध ति
 गन्धव न ति ति प्र ति
 रु ल इ ति
 प ति ति () इ ति ति स न
 - "प्र ति (ति) ति ति इ ति
 ख न ... ति रु इ ति ति

श्री द प्रप ' ी प्रस्तुत ि
 " ी व रु ी र क्ष
 ि ि ल ि ि ि स ि

क) आख्यान तत्त्व

ख त्त ि त्त ख त्त
 ह ी न प्रारम्भ
 त् से ि म् प्र आख्यानात्मक द्
 ि, द न्त क्रा ि ि
 से ि रु : से ि इ
 ि ी ि ि ि
 ी ी ि म् ि
 ी न त ी स
 तन्नरी म् प्र इ अत्यन्त इ प्रस्तुत ि :

यात रामो कष्टरे झल्लरे अल्लरे

नविकले झल्लकले डाँफे

भालेको वस लागुरे डाँफेनी

जनम पायो हो चरा

नीर चरौ हो मेरा डाँफे जनम पायो हो

न ी ि ि ि ि : ि
 ल अत्यन्त न ी ी ी ख ि
 : न म् ि न
 ज ि ि ि ी ि इ
 य ि ी प्र
 क्र के , व ि , बिन्दवासिनी, ी

स इ , ल ि दृष्यावलोकन

ि ी ी ि ि २ र्ग ि ी,

छ ि ि ी ि ि ि

ी ण ी ि ि

“दाउरा जाने दाउरेनी ।ददी !

एकु ।बनीत लेउ

पानी जाने पँधेनी ।ददी !

एकु ।बनीत लेउ।

मुरलीचरीका देशमा जाने राह पो बताइदेउ”

“नगए पूव, नगए पश्चिम

लागुरे डाँफे ।सधै दक्षिण जाउ

बानियाका कबला कबला

मुरली झुराउँछन्”

ए ज ी ी -

- ी ि ि ि ि ि परिपूर्ण

ी ी ि ख ि ि प्रे म न

स ि न ि ल ि ी मायाप्रितिका नै ि

ि रु स प्रि ि ि ी

ि फ ि ी प्र ि ि ि

- ि ग रु ग स ी ि

ि ी ी ि न न ि ल मायाप्रितिको ि

ी ख

ि ी ि ि ी त ग ि, त ि

क न इ म ि ी स ी ि म ि ि

ल न ी - ि

: ि ते त
 क न । । ि ि
 । ि ल । ल ।
 न । ि ट्ट ि ि ि न
 क ख्वाप्प स रु पे
 । रु त । च । प्र त
 रु । त ि ि न न ि न

जुरुबक उठै बाहर गई बूढीको पालो आगलो झकौ

बूढालाई हकाइछ !

बूढाको पालो जरबकै उठेछु भन्दा मा खोर मादल खस्यो हो

मादल भयो बुढो मारिनी ! बुढा मादले ताड धन्ताड धन्ताड

नचिनै लभियो हो ! चरा नचिनै लभियो हो !

न्त । ि ि ि । । से ि =
इव ि । ।
ब स प्रे प्रस्ताव ख ि
न स न्त ि

ख) गीततत्त्व

ख क ि ल्त् ि न
शे क्षेत्रांतर प्रचलित । इ अत्यन्त
स ि ि , त स ब रु प्र
प्र त सुरुचिपूण : द प्रस्तुत ि
ि अत्यन्त :

आइतबारका दिन

जुरुबकै उठ्यो

पँधेरा गयो

फटफटती पटफटती स्नानै गयो

पाँचोटी कन्या डाकेर ल्यायो

लर्कका जुल्फो कर्कमा टोपी

रु ि त । इ प्रस्तुत
ि त्र ि रु रु ि प्र ि :
ि ि शे न द्व फ प्र न ि
ि । न तै न

। ि स :

“दाउरा जाने दाउरेनी ददी ! एकु बनौत लेउ

पानी जाने पधेनी ददी ! एकु बनौत लेउ।

मुरलीचरीका देशमा जाने राह पो बताइदेउ”

स शब्दमाफत अन्त्यानुप्रास ि त
प्र इ ि ट क प्रस्तुत । क त

ग) नृत्यतत्त्व

त त्त ि त्त न ।
त त ि ि न प्र इ ि ि
व ि ि ः । ि ल
ि । ि ख ि ि
दृ षे ि न इ , । , ि प्र
ि । त ि ि श्र ि

घ) लोकतत्त्व

स ि - प्र । प्र ि
न : ि दि न
न स ि स ः रु
त प्र ि न
। ऐ ि : गण्डको ः ि
ि रु प्र स रु प्र ि त ि
ि क ङ रु प्र ि स : ः किरक्क, ः क ,
ः क , मिरिक्क, क न , क न , ि ि क , क ,
क , ले , ।, द्य क , , क क्व क , ः क

शि न

निमित्त ज फि

प्र ल नि :

सातै बारमा सातै नक्षत्र

लागुरे डाँफेलाई

आइतबार जुनो हो-

आइतबारको बहानी पख

चार घडी भन्ने-

त्यस्तै

न

। व

म फि :

श्री वन्धवासनी, सूर्य गणेश

बाघै र बालूठ, भीमसेन शीतलादेवीकोनी दशन गयो हो।

सत्ययुगका बराहदेवताको

दशन गयो न

राँगा कन्यो, बोकामा कन्यो

कठैन बरानी कुखुरामा कन्यो

हाँसमा कन्यो, परेवा कन्यो

पञ्च र बालको पूजा त दयो

मन र कन्छे पुऱ्याइमा दए

शि न

मनोकाइक्षा

निमित्त

पञ्चवली फि प्र ल

।

प्रचलित शि , न , स

शब्दहरूको

प्र प्र स रु

६.४ श्रीनन्दको चाँचरी

। लोकसाहित्य न म र्ति रू
 त्तिदिष्ट वीरचरित्रका महत्त्वपूर्ण
 प्र न ।
 महत्त्वपूर्ण
 गन्धवहरूले प म रू । , , ,
 , इ र्ति - ल त्यही रू न
 र्ति विभिन्न रू र्ति श्री न ।
 त्र प्र र्ति ल गन्धवका रू
 इ र्ति श्रीनन्दको । ।
 र्ति र्ति स ल इ श । ।
 श्री न । रू प्रस्तुत र्ति श्री न र्ति
 र्ति र्ति रू । ।
 र्ति र्ति र्ति

क) आख्यान तत्त्व

ख र्ति र्ति , र्ति , र्ति , देश , ।
 स त्त श न श्रीनन्दको । ख क्ष
 र्ति रू र्ति र्ति श्री न । ल श्री न म ने
 ऐतिहासिक र्ति स म ने । ख र्ति र्ति
 प्र इ रू :

।दनमा र सुदी हौरदेउन कुलानन्द जैसी
 हो, हामी जान्छौं राजैको सङ्ग्राम
 उँधो हेरौं धुलोटे राजै उँभो हेरौं पोस्तक

।, नेपाली लोक साहित्यको विवेचना, (र्ति : र्ति . र्ति . रू रू र्ति
 न्द्र,
), . -
 । र्ति , .

मङ्गलसका पन्ध्र जाँदा त श्रीनन्दको गमन
दन दयौं न आइतबार बुधबार

ई
प्रस्थान प्रारम्भ
श्री न स १, जुम्लो श्री द्व प्र
प्र प्र इ ः

पउठानीले हन्यो दाजैलाई कोखमा लन्यो
आधी ढाड आलैमुन आधी ढाड आलैमाथ
ए हो दाजैज्यूको प्राण गयो !

श्रीनन्दले ज श्री हृदयविदारक
श्री न श्री न श्री न
श्री न श्री न श्री न

माहल रानी खै, हाम्रा राजा भनी रौलन्
जोगनी पो होऊ भनि दिए ...
रानी भाउजू ! तमीलाई मलाई जोगनी पो लेख्यो
कन्छौ रानी दस धारा रौलन्
बाटो फुवयो तमीलाई भनि दिए
छोराले सोएलान् लोगपञ्च
खोइ, हाम्रा बाबा भनी
ढालतरबार चनु दिए
बाबाको त स्वग भयो टोपी फाल भनि दिए
आजदेख एवलै पो भएँ
दाजैज्यूको गीत गाउँछु रूछु दसै धारा
ए हो तमी - हामी कैले हिला भेट !

१ १ १ द्व रु १
 ख रु ि ट के १ १ न
 प्र ए ि ने ...
 प्रस्तुति ि प्र इ ि
 १ ज्योतिषसंग प्रसङ्गबाट रु न १
 प्रसङ्गहरु ि ट
 ि त ख १ ि ग ि ि
 श्री न १ प्र इ इ , १ , रु ,
 ि ट , रु ल स अभिप्रायको प्र १
 ख क्ष
 श्रीनन्दको १ प्र ि त्र रु श्री न प्रस्तुत ि
 इ १ ि १ : ल , छल्दी
 स ि रु प्रस्तुत ि १ प्र उद्देश्य त १
 स ज रु विरुद्ध इ प्रस्तुत
 श्री न द्व १ ि
 १ प्रचलित ब , लोकविश्वास - क प्र
 ि १ प्रसङ्गबस श्री न १ ि ि ट के
 त १ इ प्रस्तुत ि
 १ प्रस्तुत श्रीनन्दको १ , ि त्र, ि , १
 ि ख क्ष क रु प्र १

ख) गीतितत्व

त्व न गीतितत्व ि न श्री न
 १ न त म रु गन्धवहरूले इ
 द प्र १ १ रु ि गन्धवले

प्रस्तुत श्रीनन्दको । द रु इ प्र । क
 ल शब्दहरू
 । ल त्यस्तै । स । र्
 । प्र न । प्रस्तुत श्री न । गीतितत्त्वको
 दृष्टे । न

ग) नृत्यतत्त्व

नृत्यतत्त्व । त्त् प्रस्तुत श्री न ।
 । नृत्यतत्त्वको क्ष । । पङ्क्तिहरूलाई अत्यन्त
 । प्रे त्त् मिल्ने प्रस्तुत :
 । न ख क्ष । । श्री न । त्त् क्ष
 । क्ष प्र । ।

घ) लोकतत्त्व

त्त् लोकसाहित्यका । । त्त् प्रस्तुत श्रीनन्दको
 । । श् , ट् स त्त् रु प्र प्र त्र
 ज्योतिषसँग त्र त्र , न ।
 प्रसङ्गहरू विश्वासका प्र । । ।
 ट् रु ल स ट् इ रु
 । न स :

ए हो बायाँ गोडामा ठेस लान्न आयो
 कान्छोदाजै हो फका कुलच्छिन भयो,
 त्यहाँट साइत गरेर हँड्यो कान्छो दाजै !
 कालै नागले छेवयो बाटो
 फका दाजै हो कुलच्छिन भयो
 कालै वरालुले बाटो काटि गयो

फका दाजै, कुलच्छिन भयो।

स रु लोकाविश्वास त रि क्षरु
म रु ल - उ रि
प्रयत्नहरू । रि
प्र रि , । , स , रि । , त्र,
स ङ प्र प्रतिनिधित्व ।
रि इ त के स रि प्र इ ः प्र
त न । प्रस्तुत श्रीनन्दको । प्रयोक्त रि श ,
प्र त्त

६.५ निष्कर्ष

परिच्छेदमा द्व ने क्ष न -
। श्री न । विधातत्त्वगत रि श रि न
क रि प्रस्तुत । श्री न । गन्धव
विशिष्ट क्ष इ प्र ः क रु गन्धवहरूको
क्ष प्र रि गन्धवहरूले श रु
ल म रि । र्चाचत

। श्री न । विधातत्त्वगत दृ षे अत्यन्त । न
प्रे आख्यानात्मक रु प्र ि रु प्र इ
क

। । च

सारांश तथा निष्कर्ष

५.१ सारांश

न न । . । ।
गन्धव (।) । । न रु श्रे गण्डको
त्र , कास्को ल , न , व के त
। त ' प्रस्तुत त्र । । च । म ने
परिच्छेदमा । , स , देश , क्ष ,
औचित्य , ग्रं इ , शोर्धार्वाधि त्र रु ।

त्र सं परिच्छेदमा न क्ष सम्बन्धित रु
। । । व व । न ।
न न ल फ । गन्धव संस्कृतिमा
। गन्धव - । न आधिक इ ।
न न द्र , ल , न प्र न । , ष
प्रकृतिका रु , - व । चिन्तन
न । । । त के । म्र मिठासपूण ।
न । न स न ।
। विभिन्न इ कायहरूमा । स्तुति कार्तिनहरू
ल स । न । स ,
, स इ , ल , ल विभिन्न । । ल विभिन्न न
प्रप । । स स त स , व

विभिन्न रु इ व । श्री
 त्ति । । । । इ सं । ।
 । । । । से स
 उत्तराधसम्भ त । ।
 । । व । ।
 क्रि । । । । । ।
 द । ज व प्र । त । स । ।
 स । प्र स । । रु
 न । । न । । ।
 । न त । । । । व
 ख्याति प्रप । । । ।
 । । क्षेत्र । गन्धव । ।
 न व के त क्ष प्रस्तुत त्र सं परिच्छेदमा ल । ।
 प्रस्तुत त्र । । । । ।
 इ । । । । । निमित्त
 । । । । । तत्त्वहरू । ।
 न फ । । । ।
 ल रु रु इ । व रु
 () त्र । ल प्रप ल । । । ।
 ' ल ...', ' ...', 'ी भै ।...', ' ...',
 ' । ...', ' स व ...', ' ...',
 ' ।
 इ क्षेत्र व गन्धव
 इ । मे । व । स । । ।

प्रेमध्वज प्र , स , ि प्र , ज
 प्रे द , ि न्द्र ल , ल
 इ ि इ , न्द्र इ न
 न , ि , ष ,
 ि त्र रु स
 ि परिच्छेदमा ि क्षेत्रमा ि गन्धव िः न
 रु इ न रु () त्र ि
 ल िः प्र ि ल इ ि रु ि
 ल रु द्व ने विश्लेषण ि न रु
 , ि प्र ि रु ि सैद्धान्तिक क्ष
 न न रु द ि लोकाविश्वास , गन्धवहरूको
 ि द इ प्र ि इ क
 रु ि क्षेत्रमा र्चाचत
 न विभिन्न प्र , ख्याली इ ि
 इ ि ि त ि क्ष
 प पूवाधमा मर्हिनी इ ट ल क्र
 स प्रे ि ि
 न ि प ि त्र ि भिन्न इ
 ि ि च द्व ने ि रु
 ि श्री न ि विधातत्त्वगत ि श ि
 न क ि प्रस्तुत ि श्री न ि गन्धव
 विशिष्ठ क्ष इ प्र ि क रु गन्धवहरूको
 क्ष प्र ि गन्धवहरूले श रु

ल म ि १ चर्चित

१ श्री न १ विधातत्त्वगत दृष्टे अत्यन्त

(गन्धव) इ ि

ने क्ष ि प्र म ने संस्थाहरूले स ि

लोकगीतप्रति ि प्रा

त्र , स ि , ले , फ्रन

विभिन्न फ साङ्गीतिक प्रस्तुति ि फ म

गन्धव , ि प्रस ि गन्धव

ः रु रु प्रस्तुत क गन्धव इ ,

, द रु ि ि ग्र ट के ट ग्र क्षेत्र ि ष्ट्र ,

अन्तराष्ट्रिय ि ि ि म ि फ

इ क्ष ि १ ि श्री ि

सन्दभसामग्रीसूची

- प्र , लोकसङ्गीतका उज्ज्वल नक्षत्र जनताका लोकगायक झलकमान गन्धव ,
संस्कृत प्री ष , . - ,
गन्धव , , कखागायन : हे बरै जनताका लोकगायक झलकमान गन्धव ,
:
संस्कृत प्री ष , - ,
, त , लोकगीतको केही झल्का, प्रगति, वर्ष ३, अङ्क २, पूर्णाङ्क १४,
पृ. १४५, /
ज १, , मर्मस्पर्शी भावमा आमाले सोहिलन् न गीत, हामी सोच, :
पश्चिमाञ्चल इ दि , . - ,
....., लोकगायक झलकमान गन्धव र कखा गायन, दोभान, :
:
प्र , . - ,
, गण्डकीका सुसेली, : . प्र.प्र.,
, १, नेपाली लोक साहित्यको विवेचना, : ष क्र
सि न्द्र, त्रि.सि.सि.,
, न अन्यहरू, जनताका लोकगायक झलकमान गन्धव, : .
.प्र. . व ,
सि , अन्यहरू, 'गन्धव लोकवाता तथा लोकजीवन', : १
सि ,
न , १ क हामी सांस्कृतिक इतिहास, . . सि : स ,
१, ष प्र , नेपाली लोकगीतको आलोक, सि : सि प्र ,
१, , लोकगीतको संरचना, कुञ्जिनी, , इ , ,
१, सि न्द्र सि १, नेपाली लोकसाहित्यको रुपरेखा, सि ,

: प्र ,
 ि , ि क्र , 'लोक सङ्गीतका अनुकरणीय व्यक्तित्व' जनताका लोकगायक झलकमान
 गन्धव , ि : ि ति स् ि प्रि ष , - ,
 न , ि , नेपाली लोक साहित्य , ि : क ,
 ि , , झलकमानको आरबाजा , जनताका लोकगायक झलकमान गन्धव ,
 ि : ि ति स् ि प्रि ष , - ,
 , , 'माया मार भन्दिउँ' , जनताका लोकगायक झलकमान गन्धव , ि :
 ि ति स् ि प्रि ष , - ,
 व , न प्र , 'खुसीले मेरा खुडा भुँइमा थएनन्' जनताका लोकगायक झलकमान
 गन्धव , ि : ि ति स् ि प्रि ष , - ,
 खगेन्द्र , लोकवाता विज्ञान र लोक साहित्य , ि :
 दि ि स् ष ,
 श्रेष्ठ , , प्रारम्भिक कालको नेपाली साहित्य : इतिहास र परम्परा , ि :
 ठ क्र
 ि न्द्र,
 ि ि , इ , झलकमानको झलक जनताका लोकगायक झलकमान गन्धव ,
 ि : ि ति स् ि प्रि ष , - ,

अनलाइनसामग्रीसूची :

- , उज्यालो ि .
http://www.unn.com.np/index.php?pageName=news_details&catId=16&id=1358
- , गोरखापत्र . http://www.gorkhapatra.org.np/rising.detail.php?article_id=9923&cat_id=4
- , नयाँपत्रिका . http://www.nayapatrika.com/purano/last_page/14603.html
- , नेपालराष्ट्रियसाप्ताहिक . <http://www.ekantipur.com/nepal/article/?id=178>
- , वर्क्यापीडिया . <http://ne.wikipedia.org/wiki/गन्धव>
- , सारङ्गीफरपिस . <http://sarangi4peace.blogspot.com/2011/01/blog-post.html>